दिलीप वर्मा 'मीर'

क़लाम

धूप परेशान है साया – ए – अश्ज़ार देख कर
की अंधेरे कां ठहरेंगे जज़्बा– ए – इस्फ़ार देख कर

देता नहीं सुकून मुझ को शोर – ओ – शर अब तो
उठते नहीं दस्त दुआ के लिऐ ग़म–ख़्वार देख कर

चंद सिक्कों में बिक रहा है बचपन हया का
सुर्खी आंखों मे उतर आई हुस्ने–बाज़ार देख कर

दरक गई घर की दीवारें पिता का साया हटते ही
की खौफ़–ज़दा है सर झुकी हुई दीवार देख कर

सुर्ख जोड़े में घूंघट से झांकती वो मख़नूर निग़ाहें
हैरान रंगे– हीना में निहां नाम–ए– दीदार देख कर

" मीर " खुदा जाने उन की दिल–बरी अदाओं को
वो बोले से मुस्कुरा दिये मुझे गुनाह–गार देख कर

दिनेश शर्मा

भूमिपुत्र बोला भूमि से

भूमिपुत्र बोला भूमि से , माता मुझको दे यह वर |
खेती करूँ अन्न उपजाऊँ , और सभी का भरूँ उदर ||

माता बोली कर ले खेती , दाने सारे ले लेना |
पौधों के डंठल और तिनके, केवल मुझको दे देना |
अपना पोषण कर लूंगी में , तू भी अपना पोषण कर |
भूमिपुत्र बोला भूमि से, ...

भूमिपुत्र बोला हे माता , इतनी कृपा भी कर देना |
गाय बैल के चारे हेतु , तिनके डंठल दे देना |
कभी पुआल से पेट भरेंगे , और कभी भूसा खाकर |
भूमिपुत्र बोला भूमि से, ...

माता बोली यह भी मानी , तिनके डंठल ले लेना |
गाय बैल का गोबर ही तू , केवल मुझको दे देना |
बन उपजाऊ अन्न उगाऊँ , शक्तिपुंज बने गोबर |
भूमिपुत्र बोला भूमि से, ...

गोबर से उपले पाथुंगा , अपना काम चलाऊँगा |
रासायनिक खादें लाकर के, तुझ तक मैं पहुंचाऊंगा|
काम चला लेना उससे ही , ज्यादा मांग न अब तू कर |
भूमिपुत्र बोला भूमि से .....

जिद पर अड़ा हुआ है मानव , गाय बैल न पालूंगा |
भले जला दूंगा मैं यूं ही , तुझे पराली न दूंगा |
धरती माता कराह रही है, उसकी भी तो चिंता कर |
भूमिपुत्र बोला भूमि से , माता मुझको दे यह वर |
खेती करूँ अन्न उपजाऊँ , और सभी का भरूं उदर ||